R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

(हिंदी साप्ताहिक)

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 23 | अंक 15 | रविवार, इलाहाबाद, 27 अगस्त 2023 | पृष्ठ 6 | विशेषांक मूल्यः 5 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी

कुछ बातें तुमसे करनी है ,
आओ बहनों , पास हमारे।
भाई - बहन का रक्षाबंधन,
यह जाने दुनिया के सारे।
प्यार अनोखा भाई-बहन का,
बहुत कहानियां मिलेंगी इस पर।
पर इतना तुम जान समझ लो,
यह पवित्र रिश्ता है शाश्वत।

इस बार का महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक रक्षाबंधन से 3 दिन पूर्व प्रकाशित हो रहा है, लेकिन उल्लास और उमंग वही है, जो रक्षाबंधन के दिन होता है। बहनों का आना और भाई के हाथों में राखी बांधना, आरती, पूजा-माला और

मिठाई खिलाना, कितना मोहक और पावन पर्व है यह रक्षाबंधन। कृष्णकालीन युग हो या रामकालीन युग, हर युग में इस त्यौहार की महिमा, अपने-अपने ढंग से, गाई गई है और बताई गई है।

राखी तो रेशम के धागों का ,
मात्र नहीं है कोरा बंधन।
इसमें रिश्ते बंधे हुए हैं ,
भाई-बहन का अनुपम संगम।

मिठाईयां, राखी और माला-फूलों से पटा बाजार इस मौके पर हर मोहल्ले, गली, गांव के बाजारों में दिखाई देता है। प्यार-मोहब्बत और प्रेम का यह अनूठा त्यौहार, जितने उमंग और जोश के साथ भारतवर्ष में मनाया जाता है, उतने उमंग और जोश के साथ अन्य देशों में नहीं मनाया जाता क्योंकि हमारे देश की संस्कृति और संस्कार ही ऐसा है कि यहां हर रिश्ते को बड़े सलीके और व्यापक दृष्टिकोण से देखा , समझ और मनाया जाता है।

देश हमारा ऐसा बहना ,
प्रेम-प्यार का यह है गहना।
रक्षाबंधन के रिश्तों को ,
बड़े जोश से मानना बहना।

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में इस बार 21 इकाइयों में पढ़ी गई रचनाओं का संपादित अंश प्रस्तुत है। इसे देखें समझे और बताएं, कि अंक आपको कैसा लगा। प्रतिक्रिया जरुर दें।

अंत में -

इस देश की माटी सोना है ,
यह देश हमारा गहना है।
मजबूत है रिश्ता भाई-बहन का ,
इसको हमें संजोना है।

उमेश श्रीवास्तव

प्रयागराज

गज़ल

नदी का अगरचे किनारा न होता।
तो कश्ती का कोई सहारा न होता।।

ग़मो से हमेशा अंधेरा ही मिलता।
खुशी ने उजाला उतारा न होता।।

नदी से मुहब्बत उसे गर न होती।
समन्दर का पानी भी खारा न होता।।

खुदा को अगर होती दौलत की ख्वाहिश।
ग़रीबों का हरगिज़ गुज़ारा न होता।।

तुझे भी कभी रचना मन्ज़िल न मिलती।
दुआओं से मां ने संवारा न होता।।

रचना सक्सेना

सुन सखि,बादल घिर आयो

सुन सखि,बादल घिर आयो
हां, सखि,सावन मन भायो।
चल सखि, चल झूला झूलें ,
हां सखि,चल पेंग लगायें।

देख सखि,हाथ की मेंहदी
बोल सखि, चुडिहारिन बुलायें?
कहो सखि, अम्मा बाबा बुलायें
हां ,री सखि, चल नैहर हो आयें।

डॉ.मन्जू प्रकाश

सावन और झूला

सावन के बरखा में मधुरिम गीत वफ़ा के गाते हैं।
स्नेहिल स्मृतियों के झूले झूला रोज़ झुलाते हैं।

यादों की गहराई में जब खो हम अक्सर जाते हैं,
गंगा की लहरों से दिल की बातें हम बतलाते हैं,
कल-कल की आवाजें
'मधुरिम' पल की याद दिलाते हैं।
स्नेहिल स्मृतियों के झूले झूला रोज़ झुलाते हैं।

प्रेम-प्रणय के सागर में हम बैठे गोते खाते हैं,
संध्या होते चन्द्र किरण में
हम भी कुछ मधुमाते हैं,
भूली-बिसरी यादों में हम पंख लगा उड़ जाते हैं।
स्नेहिल स्मृतियों के झूले झूला रोज़ झुलाते हैं।

मेरे आँगन में अब भी कोयलिया गीत सुनाती है,
पेड़ों की डाली पर बैठी कू-कू-कू-कू गाती है,
विह्वलता के कारण मेरे नैना नीर बहाते हैं।
स्नेहिल स्मृतियों के झूले झूला रोज़ झुलाते हैं।

सिम्पल काव्यधारा

कौन कहता है?

कौन कहता है कि
मर्द को दर्द नहीं होता है
वो भी इन्सान है मेरी तरह
उसको भी सताती है भूख प्यास
अपनी नाकामियों पर वो भी होता है उदास
भले ही गम जाहिर नही करता
पर हृदय उसका भी रोता है
कौन कहता.....

पिता की डांट से क्षुब्ध
मां के दुलार से खुश रहता है
मां बाप के खुशी से खुश
उनके कष्ट से दुखी रहता है
फिक्र में उनके रातों को वो
नहीं सोता है
कौन कहता.....

प्रेम उसको भी होता है
उसको भी जुदाई खलती है
तमाम उतार चढाव के बाद भी
उसकी जिन्दगी दौडती है
अपने दायित्वों के आगे वो
हताश नही होता है
कौन कहता है.....

माँ के आँचल से निकल
पिता की उगली थाम चलता है
बहन के रेशम की डोर बन
पत्नी की फिक्र में
जोरू का गुलाम बनता है
घर के सुकून के लिए
हर सवाल पर उसके पास
बस सवाल होता है
कौन कहता .....

टूटता बिखरता है
स्वम् गिरकर उठता है
दुःख में मुस्कुराता है
अकेले मुश्किलों से लड़ता है
परिस्तिथियां कैसी भी हो वो
धैर्य नही खोता है
कौन कहता ....

वो भी घर से दूर जाने से
घबराता है
अकेलेपन से डरता है
पर अपनी सारी उलझनों को
समेटकर ,'फिक्र न करों
सब सम्भाल लूगा' कहता है
अब वो बड़ा है' बच्चा नहीं कोई छोटा है
कौन कहता.....

खुशियों में हँसता , दुःख में
दुनियां उसे रोने नहीं देती
,आंसू कमजोरों की निशानी है,
ये बातें आंसू बहाने नहीं देती
इसलिए टूट कर भी
वो सीना तान खड़ा होता है
कौन कहता....
मर्द है तो क्या हुआ
उसको भी दर्द होता है
दर्द में वो भी रोता है।

मिली श्रीवास्तव

रीवा

मन भारी हो जाता है

जब वर्तमान को भूत का
प्रश्न कोई सताता है,
जब सतत प्रयासों का
कोई परिणाम नहीं आता है,
जब हालात के हाथों
इँसा बेबस हो जाता है
जब जीवन के प्रश्नों का
कोई उत्तर न मिल पाता है,
तो मन भारी हो जाता है।
जब दिन रातों से भी ज्यादा
अंधियारे लगते हैं,
जब सपनों से भी ज्यादा
सत्य हमें ठगते हैं,
जब आधे-अधूरे मन से
जीवन के उपक्रम चलते हैं
जब भूत और वर्तमान में
द्वंद्व कई पलते हैं,
जब जीवन पर
अपना कोई नियंत्रण न रह पाता है,
तो मन भारी हो जाता है।
जब जीवन मात्र कठिनाईयों का
मंच बन जाता है,
जब कदम-कदम पे ठोकर से
पड़ता अपना नाता है,
जब जीवन मात्र पराजय का
प्रतिबिंब बन जाता है,
जब भविष्य का यक्ष प्रश्न
हमें बहुत सताता है,
तो मन भारी हो जाता है।।

रश्मि सिंह

दोहे

मन मंदिर मोहन बसे,ध्यान करूँ दिन रात ।
बन जाऊँ मैं प्रेयसी, मिले यही सौगात ।।

देख श्याम की मूर्ति को,
मन मोहित हो जाय।
वंशी उनकी जब बजे,
मधुरिम तान सुनाय।।
पूजा शिव की मैं करूँ, नाम जपूँ दिन रैन ।
शिव ही मेरी शक्ति है, मिले भक्ति में चैन ।।

करते हम सब वंदना,
द्वार खड़े कर जोड़ ।
करना सबका तुम भला,
भव बंधन सब तोड़।।
मैं माँगूँ मन्नत यही, रहना मेरे साथ ।
प्रभु तुमसे ही आसरा , छोड़ न देना हाथ ।।

मन में श्रद्धा राखिए ,
पूर्ण होय सब काज ।
प्रभु की लाठी में नहीं,
होती है आवाज ।।
मन में आस्था नहिं रखे ,
भटके वह इंसान ।

खाए दर-दर ठोकरें ,
बन जाता हैवान ।।

कण-कण में करते सदा ,
वास यहाँ भगवान ।
उर अन्तर से प्रार्थना ,
मिले हमें वरदान ।।

बंधन ये विश्वास का ,
कभी न टूटे डोर ।
जीवन सुखमय आपका ,
खुशियाँ हों चहुँ ओर ।।

मंदिर की घंटी बजे , गूँजे जय जयकार ।
अद्भुत प्रभु की आरती , अद्भुत है श्रृंगार ।।

दीपाली पाण्डेय दीया

महादेव शंभू तुम्हारा हमारा

महादेव शंभू तुम्हारा हमारा।
दुखों में सुखों में वही है सहारा ।।
जहां देखती हूँ उन्हीं का नजारा।
जपू नाम शंभू शिवा ही पुकारा।।

धतूरा चढ़ाओ चढे भंग प्याला।
जटा गंग सोहे जपो खूब माला।।
कपाली महाकाल कैलाशवासी।
मिटा दो सभी के उरों से उदासी।।

सती माँ करें वंदना हैं तुम्हारी।
सुनो आप ही अर्चना ये हमारी।।
महादेव द्वारे पड़ी हूँ तुम्हारे।
सुनो प्रर्थना आज बेटी पुकारे।।

रश्मि शुक्ल रीवा

भोपाल

आई बारिश

काले- काले बादल हैं छाए
रिमझिम वर्षा साथ लेआए।।

आया भाई सुहाना मौसम
झूमे मन और नाचे तन।।

ठंडी फुहारें सब को हर्षातीं
तनमन को शीतल कर जातीं।।

फैली हरियाली यूं चहुंओर
झूम के नाचे मतवाला मोर।।

पेड़- पेड़ पर बंध गए झूले
संगी साथी सब झूला झूलें।।

बारिश में खूब नहाएंगे
ककड़ी भुट्टा भी खाएंगे।।

सीमा

सावन गीत

आया सावन बंध गये झूले
गाये कजरी गीत हिलोरे

चारों दिशा हुई हरियाली
झूमे हर पत्ता रह डाली

महक रहे हर फूलऔर डाली
कोयल कूहुक रही मतवाली

कैलाश से आये भोले भंडारी
साथ है माँ गौरा त्रिपुरारि

अरे भक्तन की भीड़ बडी भारी
सुनलो हम सब की अरज त्रिपुरारि

ऊं नमः शिवाय के जय कारे
बोल रहे है सारे नर - नारी
ऊं नमः शिवाय

सरोज दवे

सावन गीत

सावन की बरसे बदरिया
मोरी भीगी चुनरिया
सखियां आवे कजरी गावे
आ गए बाजे बजैया
मोरी भीगी चुनरिया
अमवा की डाली पर झूले पड़ गए
राधा संग झूमे कन्हैया
मेरी भीगी चुनरिया
दादुर मोर पपीहा बोले
बाज रही कान्हा की मुरलिया
मोरी भीगी चुनरिया
प्रीतम प्यारे हमें ही सतावे
आगे पीछे पड़े गलबैयां
मोरी भीगी चुनरिया
रिमझिम सावन मन हर सावे
छम छम बाजे पायलिया
मोरी भीगी चुनरिया

सुनीता शर्मा सिद्धि

सावन की सरगम

सात सुरों की सरगम लेकर
तान छेड़ती रिम-झिम-रिम ,
सावन की बदली छाई है
सूरज की किरणें मद्धिम ।
इन्द्र धनुष के रंग संजोती
बादल पार हुईं जब वह
लाली लेकर वह उषा की
राग बदल कर हुईं सघन ।
सावन आया हरियाली ले
शुष्क धरा हुई हरी -भरी
नन्हीं बुंदियां झड़ियाँ झरती
मेघ बरसते रिम-झिम-रिम ।
दादुर मोर पपीहा बोले
पिउ-पिउ की छेड़े तान
श्यामल-घन देख नाचता
मोर सघन वन हुआ मगन।
सरितायें जलनिधि से मिलने
तोड़ चलीं हैं तट के बंधन
धरती अम्बर एक हो रहे
दोनों मिल कर रहे सृजन ।
भाई-बहिन का प्रेम अनूठा
नेह-सूत्र के हैं अनु-बंधन
बाग-बगीचे झूले पड़ गये
छेड़ें गीतों की वह सरगम ।

उषा सक्सेना

जबलपुर

जज़बात

हमको तो वो याद रहेगी ,
सावन की बरसात ।
मौन हो गए अधर तुम्हारे,
नयनों ने की बात ।।
नयन दिख रहे झीलों के सम ,
सागर हृदय विशाल ।
पलक छुपा लें भाव जिया के,
दृग लोचन झर जात ।।
हरी भरी श्रृंगारि'त धरती ,
धानी चूनर डाल ।
झूला झूल रही जो गोरी ,
मंद- मंद मुस्कात ।।
आसमान में चाँद सितारे ,
लुक छुप कर शरमाय ।
घोर घटाएँ घिर - घिर आयीं,
श्याम सलोनी रात ।।
सहसा जब गोरी ने आकर ,
मन को कुछ भरमाया ।
सम्हल न पाया हिय बेचारा,
खोल गया जज़बात ।।

छाया सक्सेना ' प्रभु '

सावन

सावन आया देखो सावन आया
बारिश की ठंडी ठंडी फुहार लाया ।
जोर बादल गरजे बिजली कड़की
कांप गये हम छतिया मेरी धड़की ।
मन भावन ये देखो मौसम आया
सावन आया देखो सावन आया
नदी, नहर तालाब, नाली नाले भर गये
किचकिच हो गयी सब तर बतर हो गये ।
नये नये पौधे ऊगे इधरउधर पंछी डोले ।
भंवरा गुन गुन करे,
कू कू काली कोयल बोले ।
उमड़ घुमड़ कर जब काले बादल आये
मोर पपीहा, झींगुर देखो गीत सुनाये ।
मनवा डोले अब दिल मेरा घबराये ।
देखो देखो काले काले मेघा आये।

राजकुमारी रैकवार राज

काले काले है बदरा

काले काले है बदरा ,
घुमरा- घुमरा आऐ,
सावन में सब मिल,
छायी है खुशहाली।

हरी भरी सुनहरी,
मन भाए दुपहरी,
जहां देखो चाहूँ ओर,
पायी है हरियाली ।

बूंद बूंद बोले रहे,
मन मन झूम रहे,
सावन में सजनी की,
कजरी है निराली ।

सूरज खेले मिचौली ,
इंद्रधनुष्य से भर ,
सुकून मन को पाया,
ऋतु है मतवाली।

उमा मिश्रा प्रीति

सावन

सावन की रिमझिम
भीग रहा है मन।
कोयल की मीठी कुहू
मोर का नृत्य देखो
झूम रहा है वन।
हिरण, बारहसिंगा
हाथी, तोता ,मैना
सभी की प्यास बुझ गयी।
गर्मी कहीं छुप गरी।
शिव के भजन से गूंज
उठे हैं मन्दिर क्योंकि
शिव को सबसे प्रिय है सावन।

डा. राजलक्ष्मी शिवहरे

सतना

जय सोमनाथ

सागर किनारा शांत,
लहरों में उमाकांत,
दिव्य रमणीय प्रांत,
आनंद अपार है।

शिव-शिवा नृत्य करे,
उर्जित उमंग भरे,
गति, लय, ताल धरे,
चेतना संचार है।

शीश सोहे गंग धार,
भुजंग है गल-हार
शिव नंदी असवार ,
भक्त के आधार है।

जय-जय सोमनाथ,
शीश पर रखे हाथ,
रात, दिन रहे साथ,
भव फेरा पार है।

मालिनी त्रिवेदी पाठक

इंदौर

सावन

सावन आयो रे ,सावन आयो रे,
उमड़ घुमड़ कर आई बदरिया,
आसमान में छाई बदरिया ,
चम -चम चम -चम बिजुरिया चमके,
तन मन को हर्षाए बदरिया ,
पशु- पक्षी नर-नारी सभी की,
प्यास बुझायो रे ,सावन आयो रे।
छम -छम छम पानी की बूंदे ,
घुंघरू की तान सुनाएं ,
पुरवइया के मस्त झकोरे,
कानों में बंसी बजाए ,
भर गए सारे ताल -तलैया ,
बच्चे कागज की नाव चलाए,
बरखा की ठंडी फुहार ,
तन मन को हर्षाए,
रंग उमंग और मस्ती के संग,
गीत मल्हार गायो रे ,सावन आयो रे।
इठलाती बरखा की बूंदे ,
जब धरती पर आती है ,
महक जाती है ,सौंधी खुशबू से,
हरियाली छा जाती है ,
कल -कल स्वर में बहती नदियां,
मधुर संगीत सुनाती है ,
हरित वर्णों में लिपटी वसुंधरा ,
दुल्हन सी शर्माती है,
वृक्ष लताएं झूम -झूम आनंद मनायो रे,
सावन आयो रे, सावन आयो रे।

शोभा रानी तिवारी

गीत

झूम के बरसो बदरा मेरे आंगन में।
गीतों की हम धूम मचाए सावन में
उमड़ रहे थे नभ में बदरा
बरस रहे थे काले बदरा
बिजली चमके , बदरा गरजे
सबका तन- मन खूब हरषे
रिमझिम हो बरसात हमारे आंगन में।
गीतों की हम धूम मचाएं सावन में।।

सावन आया खुशियां लाया
पर्वों की सौगात लाया
मेंहदी सज गई, कंगना खनके
फैनी,घेवर का स्वाद लाया
हरियाली हम तीज मनावें बागन में।
गीतों की हम धूम मचाएं सावन में।।

पेड की डाल पे झूला डालें
सखियों संग - संग झूलेंगे
ऊंचे - ऊंचे पैग बढ़ाकर
गीतों के स्वर गूंजेंगे
गीतों की मल्हार सुनाएं बागन में।
गीतों की हम धूम मचाएं सावन में।।

आशा जाकड़

दमोह

पर्यावरण

धरा की गोद में हम फूल उगाते हैं ।
फूल अब धूल से ही मुर्झाते हैं ।।
उठ रही घर से बुजुर्ग-घनी छाया ।
आँगन की नीम से कतराते है ।।
प्राण वायु सदा मिलती ही रहेगी ।
आओ बरगद पीपल लगाते हैं ।।
हवन करो मन का कलुश मिटाने ।
रोक लो धुआ की परते काली ।।
वृक्ष ही करते पृकृति की रक्षा ।
देते हैं मनुज को भोजन थाली ।।
जब तक धरा पर वृक्ष लहलहाये ।
जन्म , जीवन , सृष्टि को बचायेगे ।।
मोक्ष मिल जायेगा,मुक्ति ना होगी ।
पड़े रहेगे पर अंतिम विदा नही होगी ।।
पुत्र बिना चलेगी अंतिम यात्रा ।
वृक्ष ना होंगे तो मुक्ति की चिता ना होगी ।।

कुसुम खरे श्रुति

सावन

सावन की देखो छाई घटा निराली।
मन है प्रफुल्लित आई है हरियाली ।
दादुर मोर पपीहा ,गाते गीत मल्हार ।
वसुंधरा ने पहने नव कुसुओं के हार ।
ताल तलैया पोखर सारे भर गए ।
कल कल नदिया से सूखे बह गए ।
वसुधा ने ओढ़ी चूनर हरियाली ।
वर्षा आने से मन से भीगी आली।
अमुआ की डार आंगन में डाले झूले।
परदेस बसे कंत क्या मुझको भूले ।
छाया घन घनघोर ,चप्पल बिजुरिया चमके।
साजन से मिलते ही
गोरी का मुखड़ा दमके ।
बारिश का मौसम ,टिप टिप बरसा पानी ।
तन मन भीगा मेरा आई वर्षा रानी।
सावन बदरा बरसे ,भादो रैन गहराए।
मूसलाधार बारिश में, मन मेरा घबराए।

प्रेमलता उपाध्याय स्नेह

बनारस

गीत

अद्भुत क्षण था वो सुबह सवेरे
किया जो मैंने उन क्षणों संग फेरे ...

पुलकित नैना नभ भर-भर
सिंधु का लघु लहर लहर
आलोक चतुर्दस फैल रहा
प्रेम परिधि प्रिय को घेरे...
अद्भुत क्षण था वो सुबह सवेरे ...

फूल खिला और दीप जला
नैनों में मधुर स्वप्न पला
अंकन तेरा जब-जब मिला
कंचन काया पिघल गया
जैसे सावन घटा बिखेरे...
अद्भुत क्षण था वह सुबह सवेरे...

पोर-पोर में किसलय पावन पराग अनुराग
अनिवर्चनीय गाएं मधुर राग
ईश्वर सम परम शुद्ध प्रीति
बहता रहे अविरल अभिराम
छाएं प्रीति मध्य घनेरे...
अद्भुत क्षण था वह सुबह सवेरे...

गुनगुनाया जो आज जार जार
मिलकर प्रीति से वो हर बार
भानु रश्मियाँ सु मधुर लगे
बजे उठे हृदय का तार तार
आंखों में खुशी के आंसू हो मेरे...
अद्भुत क्षण था वह सुबह सवेरे...

सुनीता जौहरी

जिसने आहुति दे दी

जिसने जवानी आहुति कर दी
मातृभूमि की वेदी पर
उसका कैसे मोल चुकाएंगे
हम गाकर शब्द प्रखर,
जिसने अपना तन, मन, धन
सबकुछ हम पर वार दिया
फूल सा जीवन जिसका
रण में प्राणों का मोह नही किया।
जिसने लुटा दी अपनी जवानी
अपने दिन और स्वप्निल रातें
उनका मोल चुकायेंगे क्या
कहकर मुख से हम दो बातें।
आज सहादत पर उनकी
हृदय विलखकर रोता है।
माँ जिनकी अधमुई पड़ी हुई है
श्रृंगार सिसक -सिसक कहता है।
कब आओगे प्रियतम मेरे
कर्तव्य अपना निभाने को
बेटी का व्याह कराने व
बेटे को पंथ दिखाने को।
सावन के झूले तो हैं पर
वह बूँद वह बरसात नही
विस्मय आँखें सूनी हैं
कजरी में वो बात नही।
आज महावर विलख रहा है
कंगन क्रन्दन कर रोता है
हाय विधना अपनो से कोई
ऐसे भी मूँह मोड़ता है।
उड़ती नही सरसर चुनरिया
ना ही पवन बेग से चलते हैं
अन्तस के भी भाव कोमल
अब नही कभी मचलते हैं।
फिर भी तिरंगे को देखकर
सौभाग्य पर अपने इतराती है
ऊँचा जिसने शीश किया भारत का
उसके नाम पर लुट जाती है।

वन्दना सिंह

विश्व नाथ

मध्यकालीन संत साहित्य

मध्यकालीन संत साहित्य,
अंचल में लिए कई आदित्य।
कबीर, सूर हो या तुलसी,
दादू, रज्जब हो या सुंदर।
उपदेशों को जन-जन फैलाया,
एक समरस समाज बनाया।

ऊंच-नीच भेदभाव का,
जमकर किया विरोध जहां।
जप माला छापा तिलक का,
समवेत रहा विरोध यहां।

गुरु है जहां ईश्वर तुल्य,
नाम जप को माना अमूल्य।
ईश्वर का यहां कोई रूप नरेखा,
फिर भी घट घट में बसा सरूपा।

भक्ति रीति और नीति की,
बहती जहां त्रिवेणी।
सत्य अहिंसा अस्तेय का,
मिलता जहां उपदेश।

काया में काशी, दिल में द्वारका,
मन में है मथुरा बसा जहां।
श्वास, प्रश्वास पर सुमिरन होता,
अनहद का घंटा निरंतर बजता।

रीतिका पाण्डेय

तितली रानी

तितली रानी ,
तितली रानी !
तुम हो बड़ी सयानी।
फूल -फूल पर ,
झुम -झुम कर
फूलों की रंग
चुराती !
अपनी सुंदर -सुंदर
पंख सजाती ,
दुर गगन पर
इद्रधनुष को
सतरंगी
कहानी
सुनाती
तितली रानी,
तितली रानी !
तुम हो बड़ी
सयानी ।
बारिश में कही
तुम छुप जाती ।
धूप में अपनी
पंख सुखाती ।
अपनी दुखड़ा न किसी
से वायाँ करती !
हमेशा लोगो में
प्यार बांटती !

तितली रानी ,
तितली रानी
तुम हो बड़ी
सयानी ।
रहे सलामत
सुंदर दो पंख
तुम्हारी,
हे तितली रानी ,
हे तितली रानी।

जन्नत कौसर परवीन

हाँ, मैं एक नदी हूँ

हाँ,
मैं एक नदी हूँ
निरंतर बहने वाली
सदियों से.....
निस्वार्थ ,
जीवन दायिनी
बन सदैव
मानव हित में ष्ठष्ठ।
लेकिन ,
तुम (मानव)
अज्ञान के चादर ओढ़े
अक्सर
मेरे गति को
अवरोध करते हो
निज स्वार्थ हेतु !
मैं मूक हूँ ,
शायद इसी का तुम
फायदा उठाते हो ,
परन्तु
जब मेरी सहनशक्ति का
बाँध
टूट जाएगा
तब
शायद मैं स्वयं
भूल जाऊँगी
कि
मैं एक नदी हूँ ष्ठष्ठ
मैं भी
उफन सकती हूँ .....

रीता सिंह 'सर्जना'

लखनऊ

'बेटी'
चौराहे से निकली बेटी
लेकर हाथ में कट्टा
भगे जुजारी पीने वाले
लगा गलियों में सट्टा।

बांध कटार कमर में बेटी
जब निकलेगी घर से
सुन लो अत्याचारी सुन लो
भागोगे तुम डर से।

बहुत हो चुकी अत्याचारों
हद सीमा से बाहर
अपना बदला लेगी बेटी
उस गद्दार से जाकर।

भारत देश के कर्णधारों
अब तुम सब रहने दो
दे दो न्याय हाथ में बेटी के
जो चाहे करने दो।

रही अमीर घर में जो बेटी
वह सबला कहलाये
रही गरीब घर में जो बेटी
वह अबला कहलाये।

उसकी इज्जत तार-तार कर
खून से हाथ रंगाये
चीख - चीख कर भीख मांगती
तुम थे तरस न खाये।

झुंड में निकलेगी जब बेटी
घर ढूंढे ना पाओगे
मुझे बचा लो मुझे बचा लो
मुंह फाड़-फाड़ चिल्लाओगे।।

विजय कुमारी मौर्य'विजय'

आंगन
लड़कपन का सावन, वह अम्मा का आंगन ,
हमें गुनगुनाए ,बहुत याद आए... बहुत याद आए.
वह सखियों का जमघट आंगन में मेरे,
मेघा भी दल बल ले आंगन को घेरे ,
मुखरित हुआ स्वर छिड़ा है तराना ,
चांई -मांई-चांई माई घुंगरू बताशा ,
झूम झूम नच रही संगी सहेली ,
झमाझम बरस रही वर्षा की रानी,
कायनात झूमी है आंगन हमारे,
मोरनी ओ मोरनी मेरी मां पुकारे ,
बनाया है लहंगे ने मोर पंखा ,
झूम झूम नाच रहा मोर मोरे अंगना ,
वे पचगुट्ठो का खेला हमें याद आए....
हमें गुनगुनाए,
बहुत याद आए ..बहुत याद आए...

आंगन हमारे मेहंदी पीसाती ,
बड़ी सी कटोरी में भाभी भर लाती ,
लगती थी मेहंदी गदेंली हमारे ,
बेल बूटों के संग मोर गदेली में झूमे ,
वह गुड़ियों का मेला बहुत याद आए ,
हमें गुनगुनाए ,बहुत याद आए ...बहुत याद आए...
खोलती थी भाभी रेशम पिटारी ,
रुचि-रुचि कर अम्मा गुड़िया बनाती,
गूंथती थी चोंटी अम्मा हमारी,
पहनाती थी पायल मां बजने वाली ,
मेले में चलने की होती तैयारी ,
चले भैया के संग ले गुड़ियों की पिटारी ,
मेले में कुटती थी गुड़िया हमारी ,
भैया के डंडों से कुटती बिचारी ,
वह कुटती हुई गुड़िया हमको रुलाए...
हमें गुनगुनाए , बहुत याद आए ...बहुत याद आए..
लड़कपन का सावन , वह अम्मा का आंगन,
हमें गुनगुनाए बहुत याद आए ...
बहुत याद आए...

पुष्पा गुप्ता दोसर

गज़ल
ज़माने को हमारी दिल्लगी
अच्छी नहीं लगती।
करें क्या हम हमें संजीदगी
अच्छी नहीं लगती।
नहीं हमको मुहब्बत है बनावट के उसूलों से
खुदी मे झूठ की मौजूदगी
अच्छी नहीं लगती।
हमारे खून मे बसती वफादारी है यारों से
अदू से भी हमे तो
दुश्मनी अच्छी नहीं लगती।
हमारी ज़िन्दगी तुम हो
तुम्ही से हर खुशी जानम
तुम्हारी आँखों मे आए
नमी अच्छी नहीं लगती।
भरे हो गर अना से
अपने ही मां बाप के आगे
बुतों के सामने
फिर बंदगी अच्छी नहीं लगती।
कभी तो रोग लगना चाहिए
उल्फ़त का भी यारो
फ़कत सेहत ही से तो
ज़िन्दगी अच्छी नहीं लगती।
बहुत धोखे उठाए दिन के
खिलते से उजाले में
कि अब शब मे भी
कोई रोशनी अच्छी नहीं लगती।
भटकता दिल रहा 'मंजू'
तलाशे ज़िन्दगानी में
हमें इस दिल की
ये आवारगी अच्छी नहीं लगती।

मंजू सक्सेना

कटनी

रेवा के तटों पर
छुप गए तारे
दिखी है भोर की लाली,
सुगबुगाते से लगे हैं.....
बाँस के झुरमुट.....
सात घोड़ों की सवारी पर
आ रहे हैं, रोशनी के देवता
धारणा को धन्य करने ।
चर-अचर को उष्मा
नव तेज देने, प्राणियों को
शक्ति दे संताप हरने ।
चली है पुरवाई शीतल
गंध फूलों की लिये
बुदबुदाते से लगे हैं.....
बाँस के झुरमुट....
बज रहे हैं शंख
रेवा के तटों पर, पार्थिव
शिवलिंग रोपे जा रहे हैं ।
सद्यस्नाता वधूटी
रेत हाथों में लिये हैं
अधरद्वय रुद्राष्टक, दोहरा रहे हैं।
मधुर घंटी
ऋचाओं के बोल सुन
मुस्कुराते से लगे हैं.....
बाँस के झुरमुट....
धूप का सोना
बिखरते ही,जी उठेगी जिन्दगी
चेतना से भरी पूरी।
वाहनों का शोर
उद्यम,युक्तियाँ, उपलब्धियाँ
वक्त के माथे लिखेंगे कथा पूरी।
साक्ष्य होगा
वक्त ही, इस वक्त का
गुनगुनाते से लगे हैं....
बाँस के झुरमुट.....

अरूणा दुबे

पुस्तकें
वेद
पुराण शास्त्र
उपनिषद हमारे धर्म
संस्कृति का
आधार ।
हमारे
धर्म ग्रन्थ
रामायण , गीता ,महाभारत
ज्ञान का
भण्डार ।
पुस्तकें
ज्ञान, विज्ञान
साहित्य , दर्शन , इतिहास
का दर्पण
सौभाग्य ।
पुस्तकें
ही बनाती
हैं हमे अज्ञानी
से ज्ञानी
इन्सान ।
पुस्तकें
न होती
तो मानव निरा
पशु ही
रहता ।
विद्या
की देवि
सरस्वती का साक्षात्
अवतार पुस्तकें
होती ।
पुस्तकें
पढ़कर ही
जानते शिष्टाचार और
बनते वेदा चार्य
शंकराचार्य ।
पुस्तकें
मानव की
सबसे अच्छी और
प्रिय मित्र
हैं ।
हमेशा
मानो इनका
आभार ये हमारे
सुख का
आधार ।

कल्पना कोटक

बाल गीत
आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं ।
वन उपवन की सैर कराएं ।
तितली उड़तीं कितनी सारी
लगती है यह कितनी प्यारी
ये फूलों के रंग चुराती ।
इनसे अपने पंख सजाती ।
अदभुत करती हैं चित्रकारी
सबको लगती हैं अति प्यारी ।
यह देखो फूलों की क्यारी ।
महक रही है बगिया सारी ।
लाल ,गुलाबी गहरे पीले ।
फूल खिले हैं नीले -नीले ।
जूही ,चमेली ,चम्पा ,महके
गुड़हल अंगारों से दहकें ।
गुलमोहर गेंदा भी फूले ।
गुलाब डाली से झूलें ।
कलियों के मुख भँवरे चूमें ।
संग पवन के डाली झूमें ।
पत्तों में छिप कोयल कूके
आम तोड़ने से मत चूकें ।
हरे- भरे है तरुवर सारे ।
कितने प्यार से हमें निहारें ।
मीठे फल यह हमको देते
नहीं किसी से कुछ भी लेते
इन पर पंक्षी करें बसेरा ।
वह देखो चिड़ियों का डेरा ।
वृक्ष हमारे मित्र हैं प्यारे
हमको जीवन देते सारे ।
प्राण वायु हम इनसे लेते
धरती को यह जीवन देते
इनकी रक्षा करनी होगी
काट दिया तो मुश्किल होगी ।

निकिता कोटक

सवाल
कभी मन करता है
कि तुमसे पूँछू
ये भावनाएं
हमारे मन में
कहाँ से आती हैं
इनकी अभिव्यक्ति
क्यों नहीं हो पाती हैं
क्यों ये
अंदर ही अंदर
घुटती-मरती हैं
फिर सोचती हूँ
शायद तुम्हारे साथ भी
ऐसा ही होगा
शायद
तुम्हारे पास भी
इसका कोई
जवाब न होगा ।

श्रीमती निधि जैन

दिल्ली

विस्थापन
जीवन में तरक्की की खातिर ,
गांव से शहरों का विस्थापन ।
घरों को छोड़कर जाना ,
गांव वालों का दर्द बनकर रह गई ।
जिन्होंने भोगी है यह पीड़ा ,
सहा है बिछुड़ने का ग़म ।
वियोग हुआ उन घरों से ,
जो अपने जीवन भर की कमाई से बने ,
जिसकी एक एक ईंट -
उनके मेहनत की कहानी बयां करती थी ।
जिस गेह को बनवाया था शान से ,
वही आज खंडहर हो चले ।
उसी खंडहर में ही है यादों का अनमोल
पिटारा ।
जिस भवन में वो जन्में -
व उनके बच्चों ने जन्म था लिया ।
जिस आंगन में वृक्ष थे कई ,
जिनके तले बच्चों ने चलना - खेलना
सीखा ।
चिड़ियों की चहचहाहट से सवेरा होना
देखा ,
आज वो खुशियां पीछे छूट गई ।
बच्चों के बच्चों को उस निकेतन में ,
चलने - खेलने का सपना टूट गया ,
सुकून उस खंडहर के घर में छूट गया ।
वह सुकून दुनियां में न अब पाएंगे ,
गांव में ही सुन्दर सा शहर बसाएंगे ।

सरिता कपूर 'गीतिका '

अरे! परों में जबतक दम है
अरे! परों में जबतक दम है,
आसमान में उड़ने दो
नए सुनहरे सतरंगी कुछ ,
सपनें मन में बुनने दो

बीता बचपन संग जवानी ,
बाद बुढ़ापा आएगा
अभी जरा थकने से पहले,
काम ज़रूरी करने दो

नही किसी का कोई जग में ,
ये तो रीत पुरानी है
पर आभासी दुनिया में कुछ,
मन को और विचरने दो

पता सभी को नन्हे पंछी ,
छोड़ घोंसला जाएंगे
पर जबतक वो पास हमारे ,
सुमन हृदय में खिलने दो

तूफानों के डर से कश्ती,
कहाँ बीच में है रूकती
छूट गया जब दूर किनारा,
हालातों से लड़ने दो

कल क्या होगा सोच-सोच मन,
क्यूँ 'अंजू' बेज़ार करें
चाँद सितारों को छूने की,
अभी उड़ाने भरने दो

अंजलि गोयल अंजू

तिनसुकिया गोलघाट

सरस्वती वंदना
चले सरस्वती मंदिर,
करे माँ की आराधना,
वर मांगे दोऊ कर जोड़,
करे पूजा अर्चना,
माँ हँस सवारी पर लगती बड़ी प्यारी,
स्वेत कमल स्वेत परिधान
निरखे दुनिया सारी,
माँ की महिमा का कैसे करूँ बखान,
देती विद्या वर करती मुश्किल का समाधान,
कंठ विराजो आकर माँ शारदे ,
गोद में बिठा कर विद्या का वर दे,
भूल चुक क्षमा करो समझ बालक नादा,
इतनी सी विनती करो स्वीकार सदा।

मीना नागोरी

मां ने जन्म दिया
मां ने जन्म दिया,
पिता ने पाला पोसा,
मां ने दूध पिलाया,
पिता ने इडली डोसा,
मां ने प्यार लुटाया,
पिता ने जीवन का पाठ पढ़ाया,
मां ने बीमार होने पर आंसू बहाए,
पिता दर दर की ठोकर खाए ,
मां ने बहुत सर चढ़ाया,
पिता ने गलतियों को समझाया,
मां ने रात दिन एक किया,
पिता ने सुबह शाम काम किया,
मां ने जीवन दिया,
पिता ने जीवन जीना सिखाया,
मां ने अपना सर्वस्व लुटाया,
मां ने अपना सर्वस्व लुटाया,
पिता ने सर्वस्व कमाना सिखाया,
पिता ने सर्वस्व कमाना सिखाया।।।

निशा काबरा

सावन और शिव
सावन में एक लोटा जल चढ़ाए
शिव से अपार फल पाए !
शिव की महिमा कोई ना जाने !
तीन लोक में कौन है जो ना माने !
जब जब धरती पाप युक्त हो जाए!
रौद्र रूप धर कर इसे मुक्त कराएं !
शक्ति सदा विराजे इनके संग !
हर क्षण बहती बन दिव्य तरंग !
पावन गंगा को अपनी जटा में समाए !
भक्तों पर ये सदा अपनी कृपा बरसाए !
नंदी गणेश पुत्र और पुत्री अशोक सुंदरी !
भांग धतूरा बेलपत्र चढ़े और दूर्वा हरि हरि!
शिव शंभू शंकर की है ब्रह्मांड में सारी
शक्ति !
ॐ नमः शिवाय बोल करो तन मन से
भक्ति!

सीमा सिंघी

बिना मात्रा की शिव स्तुति
जय जय जय भव रक्षक,
जय जय जय गरलधर।
जब जब कष्ट पड़त भगत पर,
तब तब कष्ट हरत मम हर हर।
जल थल नभ सब जगह पर,
वन उपवन हर नगर डगर पर।
पल मह परगट भवत धरत पर,
जब सहरदय ,स्मरण करत नर।
कर अजगन अनध भगवन,
मस्तक चन्द बसत जर पर।
तन भसम रमत रह मगन मस्त,
गल मह सरपन करत बसर हर।
तन मन धन सब अरपण कर,
मम सकल कष्ट हरण करत हर।
शत शत नमन करत भगवन,
रख वरद हस्त मम सर पर।

सरला बजाज

सावन और शिव
मच गया शोर सारी नगरी रे,नगरी रे,
आया सावन का महीना
संभाल तेरा मनवा रे,
रिमझिम- रिमझिम पड़े फुहारें रे ,
फुहारे रे,
चलो कावड़िया बाबा की नगरिया रे,
कांवड़ में गंगा जल भर लो रे,भर लो रे
नाचते - गाते बम- बम का नारा लगा लो रे,
शिव की महिमा गाओ रे,गाओ रे
माँ गौरा को रिझाओ रे,
सावन का महीना बड़ा पावन रे,पावन रे,
दूध ,फूल बेल पत्र चढ़ाओ रे,चढ़ाओ रे,
शिव करते नन्दी असवारी रे,असवारी रे,
पीते भंग प्याला रे
रहते मतवाला रे,मतवाला रे,
शिव भक्तों का प्यारा रे,प्यारा रे
भरते सबका भंडारा रे ,भंडारा रे ।

मीना नागोरी

सावन
सावन आया लाई बहार
धरती गा रही गीत मनुहार
चहूं और खुशहाली छाई
खेतों में फसल लहराई
रिमझिम रिमझिम बादल बरसे
पिया मिलन को नेन तरसे
सज धज कर सखियां आई
झूलन रूत की दी बधाई
सावन आया लाई बहार
हम सब सखियां सज-धज कर तैयार
मेहंदी रची हाथों में
चमके बिंदिया माथे में
खनखन चुडला बोले
पायल की खनक संग ले हिंडोले
सावन मास प्रेम का .....
सावन मास रास का.....
सावन मास त्योहारों का.....
सावन मास उपवास का.....
सच्ची आराधना से शिव शंकर को रीझाए
मन इच्छा वर पाए,सब संकट दूर हो जाए ।
सब मिलकर बोलो.....
'हरि ओम नमः शिवाय !!
हरि ओम नमः शिवाय!!'

पूनम अग्रवाल

हैदराबाद

भजन शिवमई
मन में बसाकर शिव को
मैं भक्ति में खो जाऊं
दिखे मां गोरा बस मुझको
और शिव की महिमा गाऊं
मैं शिवमई हो जाऊं -४
गंगा जी से लेकर जल
मै शिवलिंग पर चढ़ाऊं
गर हो जाए कोई गलती
मैं शिव गोरा को मनाऊं
पीकर भक्ति का प्याला
मैं शिवमई हो जाऊं-४
मेरे भोले बाबा ऐसे
दुजा ना इनके जैसे
बस जल से प्रसन्न हो जाते
जो भक्ति भाव से जाते
मेरे शिव भोले भंडारी
इनकी क्या-क्या महिमा गाऊं
बिन मांगे सब कुछ देते
पल में दुख ये हर लेते
डम डम बाजे डमरू
जहां नंदी रहते हर पल
मृगेश मयूरा संग संग
मूषक सर्पों की हलचल
दिन रात मैं इनको ध्याऊं
दिन रात में इनको ध्याऊं
मैं शिव की महिमा गाऊं
मैं शिवमई हो जाऊं-४

रीना प्रदीप कुमार

कलयुग
जुबां पर राम मन में रावण बसता है ,
कलयुग है जनाब भरत का त्याग
कहां मिलता है ,
राम कृष्ण की धूनी रमाते पर
उनकी राह कहां चल पाते ,
कलयुग है जनाब मुंह में राम
बगल में छुरी का ज़माना है ,
किस धर्म ने लड़ना सिखाया
आज तक समझ ना आया ,
कलयुग है जनाब जहां एक नारा सबको
प्यारा ,अपना काम बनता
भाड़ में जाए जनता ,
हड़पने वाला बढ़िया है ,अपराधी तो ना ल
ड़ने वाला है ,
आज भी अर्जुन बाढ़ उठा ना पाया ,
कलयुग है जनाब
कृष्ण कहां से लाएं
कृष्ण कहां से लाएं।।

अंजली चौरसिया

बैरागी से राग
कभी सोचती हूँ...
आकाश यदि संन्यासी हो जाये ..
तो कैसा हो!
धरती की उष्णता ..कहां जाएगी..??
बादल न बरसे ..तो धरा सूख जाएगी।
इसके भीतर का महासागर ..
सिमटने लगेगा ,सूखने लगेगा...
बीज रोपे तो भी ...कोपलें न फूटेंगी...
धरा के देह का ..अनूठा सौंदर्य ...
वन और वनस्पति ...सब सूख जायेंगे...
फिर बचेगा क्या ...एक दावानल !!!
जो सब कुछ ..नष्ट कर सकता है।
ये सोच के मैं ...सुन्न होने लगती हूं...
और मुट्ठी भर आसमान को ...
इन हाथों में समेट लेती हूं...
और माथे से लगा लेती हूं।
कहते हैं न...सब ..

आत्मीय स्पर्श ...किसी को ...
संन्यासी नही बनने देता !!
बस मैं भी वही कर रही!!

सुधा शर्मा कोयल

शिलांग

मेरा अस्तित्व

दिगन्त से दिगन्त तक है मेरा अस्तित्व
चारो दिशा में मौजूद है
मेरा अस्तित्व
आकाश के ग्रहो तारों में
मेरा अस्तित्व
प्रकृति के कण कण में
मौजूद हुँ मैं
प्रस्तर में है अगर मेरा अस्तित्व
तो रेत के हर एक टुकड़ों में भी हुँ मैं
मैं दिशा हुँ
हिमालय की चोटी पर चरने वाले
वो पहला मनुज हुँ
मैं ही अहंकार, मैं ही स्वाभिमान
मैं ही खोज, मैं ही आविष्कार
मैं ही विज्ञान, मैं ही साहित्य
नष्ट-भ्रष्ट-प्रलय में अगर मैं हूँ
सृष्टि-नव निर्माण भी मैं हूँ
मैं नारी हुँ, पुरुष भी तो मैं ही हूँ
पुरुषों के विचार मैं हुँ
तो नारी का सम्मान भी मैं हुँ
मेरा अस्तित्व राधे कृष्ण के प्रेम भी है,
और मैं ही कंश हुँ
राम और रावण दोनों मेरे में मौजूद
मैं जन्म हुँ मैं मृत्यु हुँ
आदि और अंत हुँ
ब्रम्हांड के हर छोर पर मेरा अस्तित्व
धरती के अंतराल पर मेरा अस्तित्व
तो समुंदर के गहराई पर भी मैं हुँ
प्रसाद जी के श्रद्धा और मनु हुँ जहां
वही उनकी ईरा भी मैं हुँ
मैं ही मेरा अस्तित्व हुँ,
उसका अस्मिता भी मैं हुँ।

मल्लिका दे

प्रकृति

प्रकृति करती ज्यों तो
किसी का तिरस्कार नहीं
अत्याचार होता जब मानव का उस पर
प्रतिशोध में करती उसका वहिष्कार यहीं ।
काश ! मनुष्य तुम समझ पाते
बदौलत जिसके तुम स्वस्थ्य जीवन जीते,
दमन उसी का करने पर तुलते
क्यों दुःख दर्द के आँसू पीते
पेड़ पौधे जो शुद्ध हवा देते
उन्हीं को काट कर कैसा जीवन जीते
पहाडों को काट कर समतल बनाते ।

वातावरण की नमी को ही सुखाते ।
दुरूपयोग जल का तुम करते। कारखानों के
उठते शोर से
गाड़ियों के प्रदूषण से
ऊँची ऊँची इमारतों से
धूप- हवा को छीनते तुम जाते ।
कब तक सहती जुल्म प्रकृति
उसने आखिर समझा ही दिया ।
कहीं सुनामी , कहीं सूखा,
कहीं भूकम्प तो कहीं जलजले का जलवा
दिखला दिया।
अब भी सम्भल जा ए मानव
पीढ़ी अगली का क्या हश्र होगा !

क्या विरासत में देगा उनको
कैसे उनका बसर होगा !!

दया शर्मा

क्या खोया क्या पाया

बचपन से आज तक,
न जाने कितने अनुभव हुए,
कुछ अच्छे, कुछ बुरे,
न मुक्कमल हुई सब ख्वाहिशें,
रह कई अधूरी कुछ हसरतें।
मुश्किल थी जिंदगी की डगर,
टेढ़ी मेढी, लंबी मगर,
चलती रही जिंदगी की गाड़ी इनपर।
कई मोड़ आए, कई पड़ाव डाले,
मिले इस राह में कई हमसफर,
कुछ साथ चले, कुछ छोड़ गए,
चलता ही रहा जिंदगी का सफर।
रोज़ एक उम्मीद का सूरज उगा,
नई आशाएं,
नई उमंगे जगती रही सारी दोपहर,
थक गई जिंदगी सांझ ढलने पर।
छा गई कालिमा रात की फिर,
आंख हुई बंद तो सोचने लगी,
क्या खोया, क्या पाया जिंदगी भर।

नीता शर्मा

अलग राह

निकल पड़ी अपनी अलग राह बनाने को,
क्यों चलूं मैं उस राह पर जिस राह पर चलते
हैं सभी अपना अस्तित्व भुलाने को।
निकल पड़ी हूं आज वह बादल बनने को।
जिसकी चाह है मरुस्थल में बरसने को,
निकल पड़ी हूं आज वह सागर बनने को।
जिसकी चाहे किनारों पर ठहरने को।
करना चाहती हूं ठोकरो का सामना।
लगाना चाहती हूं विफलताओं को गले,
क्यों हर बार सफलता की चाह करूं।

एक कोशिश करती हूं खुद को हारने की।
हार गई तो कुछ अनुभव ही पाऊंगी।
फिर शायद कुछ नया कर पाऊंगी।
निकल पड़ी हूं वह नदी बनने को।
जिसे चाह है अकेले बहने को।
निकल पड़ी हूं वह परिंदा बनने को।
जिसे चाहा है अकेले ही उड़ने को।
निकल पड़ी हूं एक अलग राह बनाने को।
क्यों चलूं मैं उस राह पर जहां चलते हैं सभी
अपना अस्तित्व भुलाने को।।

विद्या मिश्रा

कैसा यह प्रेम .....

जैसे, चाँद का मिलन चाँदनी से
निशा बन जाती धवल
साक्षी बन प्रकृति निहारती निस्तब्ध
चाँद करे चाँदनी को आलिंगनबद्ध ।
यह अनुपम प्रेम ....

जैसे, उषा-मिलन को व्याकुल दिनकर
विरहित उषा के ओस-कण
कर हृदयंगम मगन दिवाकर
विरह-मिलन का अद्भुत खेल।
यह अनुपम प्रेम .....

जैसे, सागर का आकर्षण तट से
संदेश लाती-ले जाती फेनिल लहरें
जब आती पूनम की रात
आतुर सागर मिलनोत्सुक तोड़ तटबंध।
यह अनुपम प्रेम .....

जैसे, विश्वंभरा-आकाश का नेह
मेघ, डाकिया बन संदेश लाते
रिमझिम बूँदों की 'पाती' देते
क्षितिज बन जाता अटूट मिलन।
यह अनुपम प्रेम .....

जैसे, माँ का शिशु से अगाध प्यार
धावित माता, सुन बाल पुकार
धूल-धूसरित शिशु का चुम्बन ले बार-बार
चन्दा, सूरज, कान्हा कह होती निहाल।
यह अनुपम प्रेम .....

जैसे, आत्मा का परमात्म-प्रेम
चंचल मन, माया-काया बन दिवार
गुहार लगाती है बारम्बार।
कैसा यह प्रेम?
यह अनुपम प्रेम .....

डॉ अनीता पंडा 'अन्वी'

जौनपुर

हार नहीं मानूंगी

'हार नहीं मानूंगी मैं जीवन के रण में
जूझूंगी ,टकराउंगी,हर विपरीत क्षण में।
मैं हूं इस धरित्री सी, सदैव संघर्षरत
पर चिरप्रफुल्लित, अपनी तकलीफों
से जूझती हुई सदैव आगे बढ़ती रहूंगी।
नहीं हरा पाएगी जिंदगी मुझे
क्योंकि मैं भारतीय नारी हूं
क्योंकि याद है मुझे मेरी संस्कृति
जो कि मुझमें रची बसी है।
जिसके बल पर मैं संघर्ष करूंगी
चाहे अंधियारा गहराए या आंधी तूफां आए
मेहनत और ईमानदारी
के बल पर जीवन जियूंगी।
बेशक तकलीफें उठानी पड़ेंगी ज्यादा ही,तो
क्या, मैं अपने स्वप्नो को जिंदा
रखूंगी, क्योंकि मुझे याद हैं मेरे पूर्वज
जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में
कभी हार नहीं मानी, मैं भी नहीं
हारूंगी, कर्मरत रहूंगी तो मेरे भी
अच्छे दिन आएंगे।
क्योंकि मैं वंशज हूं महारानी लक्ष्मीबाई
की, महाराणा प्रताप की, मैं वंशज हूं
गांधी की, तिलक की , हार नहीं मानूंगी
क्योंकि मैं वंशज हूं लौह पुरुष की
अपने अविस्मरणीय पूर्वजों सी दृढ़ता
और विश्वास है मुझमें।
मैं अपनी परिस्थितियों से जूझूंगी
टकराउंगी,राह निकलेगी, अंधेरा
छंटेगा , जीवन ज्योतित होगा अवश्य
एक दिन क्योंकि मैं संघर्षरत हूं,कर्मरत
हूं, क्योंकि मैं मैं धरित्रीसम हूं
क्योंकि मैं, निर्भीक हूं ,अडिग हूं
कर्मरत हूं अतः जीवन समर में
जीत होगी यह दृढ़ संकल्प लिए
बढ़ रही हूं मैं,आगे आगे सदा आगे।
दृढ़ संकल्पित हूं नहीं हारूंगी मैं।

डॉ मधु पाठक

कजरी

आयल सावन मास मनभावन,
लागे बहुत सुहावन ना ।
पार्वती शिव संग विराजत
और गजानन साथ
हो रामा
भगतन पीर हरन के खातिर
आए धरणी धाम
हो रामा
आयल सावन मास मनभावन
लागे अधिक सुहावन ना ।
सीता संग में राम विराजत
धनुष बान लिए हाथ
हो रामा
निशाचरन संहारन खातिर
लिए मनुज अवतार
हो रामा
आयल सावन मास मनभावन
लागे बहुत सुहावन ना ।
राधा संग में श्याम विराजत
मुरली शोभित हाथ
हो रामा
मधुर -मधुर सुर
बाजे बसुरिया
राधे राधेश्याम हो रामा
राधे राधेश्याम
आयल सावन मास मनभावन
लागे बहुत सुहावन ना ।

डॉ ० सुमन सिंह

भीलवाड़ा

तुम को प्रेम नज़र आएगा....

इस धरती पर प्रेम को ढूंढ़ो,
तुम को प्रेम नज़र आएगा।
निंदा -स्तुति की चाहत में,
प्रेम तुम्हारा मर जाएगा।

तपित,तृषित जब भू मंडल हो
,बरखा की बूंदों को पुकारे।
मन की चाहो में ईश्वर तो,
घर आएंगे,ईश तुम्हारे।
नम नयनों से उन्हें निहारें,
ह्रदय हमारा भर पाएगा।

इस धरती पर प्रेम को ढूंढ़ो,
तुम को प्रेम नज़र आएगा।

क्षमा,दया, तप, नित्य नियम हो,
नेह निभाने का भी दम हो।
सत्य,सनातन,दिल में हमारे,
मानवता का भी संगम हो।
सीधी सड़क -सा मुख्य मार्ग ये
मत पूछो कि,किधर जाएगा

निंदा स्तुति की चाहत में,
प्रेम तुम्हारा मर जाएगा।

लाजवन्ती शर्मा

श्रीमती पंकज धींगः

माँ जब दुनिया छोड़ जाती है

माँ जब दुनिया छोड़ जाती है
वह हर जगह नजर आती है
चाय के उबालों में
पिसे हुए मसालों में
खीर भरे प्यालो में
खाली घर यादों से भर जाती है
वह हर जगह नजर आती है
धान की कोठी में
घी चुपड़ी रोटी में
गुंथी हुई चोटी में
तस्वीरों में मुस्कुराती है
वह हर जगह नजर आती है
लड्डू के कटोरदान में
अचार के मर्तबान में
मेज पर रखे गुलदान में
ख़ुशबू सी बिखर जाती है
वह हर जगह नजर आती है
आरती की थाल में
कसीदे वाली शॉल में
तुरपन वाले रुमाल में
समय सी गुजर जाती है
वह हर जगह नजर आती है
गायों के बाड़े में
गर्मी,बरखा,जाड़े में
हल्दी,तुलसी के काढ़े में
दुआओं सी असर कर जाती है
वह हर जगह नजर आती है
थाली,कटोरी,गिलास में
बेवक्त की भूख-प्यास में
चलती हर साँस में
मन में घर कर जाती है
वह हर जगह नजर आती है।

पंकज धींग

मीत

प्यार क्या है जो जानते ही नहीं, वो जो
दिल की भी मानते ही नहीं...
क्या कहें ऐसे ग़म गुज़ारों को, जो ख़ुशी
दिल में ठानते ही नहीं.....
कृष्ण राधा कभी न बन पाए, जिनके जीवन
में कोई प्यास नहीं....
प्रेम जिनके लिए नहीं कुछ भी,जिनको भावों
की कोई आस नहीं....
सादगी प्रेम शिद्दतों की राजधानी है, मेरा
दिल प्यार की निशानी...
जो समंदर में ओज भरती है, मेरे अंदर वही
रवानी है.....
कृष्ण राधा ने जिसको नाम दिया,हीर राँझे ने
भी मक़ाम दिया.....
जिसने मीरा के विष का पान किया,बस वही
प्यार की कहानी है...
जिसकी चाहत के गीत गाए हैं, सूर रैदास
और मीरा ने.....
जिसकी चाहत की चांदनी उजली,मुझमें
मीरा वही दीवानी है.....

हिमांशु जैन मीत

अपेक्षा

दर्द ये मुहब्बत का तुम जहां सुनाओगे।
आँसुओ को चुपके से देखना छुपाओगे।।
झुकती नज़र जब भी आपको तलाशेगी ,
रहगुजर सुनो अपना हाथ क्या थमाओगे।।
बावरी ये धड़कन भी आस सी जगाती है,
दुरियाँ अजी खुदबखुद आप ही मिटाओगे।।
क्यूँ नज़र झुकी सी है
सांस कुछ मध्म सी है,
सुन ज़रा इनायत से हाथ क्या मिलाओगे।।
क्यूं लगे अपेक्षा अब इश्क़ हो गया तुम से ,
फलसफा मुहब्बत का आप ही निभाओगे।।

अपेक्षा व्यास

भीगी-सी एक शाम

ये मौसम और भीगी- सी एक शाम,
देती यादों की दस्तक,दिल में एक पैगाम!
सुकून के कुछ लम्हें जो चुराये ज़िंदगी से,
कैद में रखे मैंने,,भला!
कैसे कर दूं इसे आम!
ये मौसम और भीगी-सी एक शाम,
जिसमें सँग होती थी तुमसे मुलाकात!
कैसे ख्वाबों के मंजर के साये गुजरते,
कुछ खत में बनती थी,
फिर बिगड़ी कोई बात!
ये मौसम और भीगी-सी एक शाम,
ये पवित्र हमारे प्रेम की थी पहचान!
ठंडी पुरवाई में लहराते दुपट्टे से,
कैसे उलझ कर तुम होते थे हैरान!

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - रिक्त पद
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - ऊषा सक्सेना
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती
गोडा ब्यूरो - विभा श्रीवास्तव
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी'
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
लुधियाना - श्रद्धा शुक्ला
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी
बरेली ब्यूरो, गोवाहाटी ब्यूरो, पठानकोट
ब्यूरो,रीवा ब्यूरो, दमोह ब्यूरो, चंडीगढ़ ब्यूरो
मुजफ्फरपुर ब्यूरो, आरा ब्यूरो
प्रयागराज इकाई - शंभुनाथ श्रीवास्तव
कानपुर इकाई - अशोक गुप्ता अचानक
विश्वनाथ इकाई - संतोष महेतो

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ ।

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

ये मौसम और भीगी-सी एक शाम,
आओ,फिर से जी लें वो उम्र तमाम!
जहां नैनों में होती थी बातें,,
खामोशियों में झलकते थे सब जज़बात!
ये मौसम और भीगी-सी एक शाम!

शीला 'क्षितिजा'

हे भगवन

हे भगवन अवगुण तुम मेरे हर लेना मुझ पर
बस तुम कृपा अपनी कर देना ।
दुनिया तो बाधाओं का एक मेला है कैसे
बताऊं कितना यहां झमेला है ।।

रंगमंच है दुनिया खेल तमाशा है
चहुं ओर फैलती जल्दी निराशा है ।
देकर आशीर्वाद दुखों को हर लेना
मुझ पर बस तुम कृपा अपनी कर देना ।।

मन मंदिर में सबके अंतः ह्रदय से
घोर निराशा के बादल को हर लेना ।
आशाओं के दीप जलाकर धर देना मुझ पर
बस तुम कृपा अपने कर देना।।

सुनीति केशरवानी 'नीति '

अहम

रिश्तों पर हावी हो रहे,
अब ख़ुद के ही अहम हैं।
'कमतर' है साथी मुझसे,
ये सबको ही वहम हैं।
जाने कैसे, क्यूँ बढ़ने लगी,
सम्बन्धों में तल्खियाँ
क्या कहें हम मिजाजों की,
वो सबके ही गरम हैं।
चटखने लगे शीशे-से,
वजह कुछ खास भी नहीं
समझदारी व विश्वास बस,
आपस में ही कम हैं।
रहते हैं दो किनारे-से,
कभी मिलते नहीं परस्पर
प्रचलन हुआ सिर्फ 'मैं' का,
होते ही नहीं 'हम' हैं।
राही जुदा राहों के हैं,
मंजिल भी हुई जुदा-जुदा
बनते ही नहीं 'हमक़दम',
'किरण' को यही ग़म हैं।

किरण आगाल

बिना जब भी आया है सावन

तुम्हारे बिना जब भी आया है सावन
तो खुशियां अधूरी ही लाया है सावन
करूँ प्यार-तकरार किससे भला मैं
तुझे पास मेरे न लाया है सावन
तुम्हे क्या कभी याद मेरी न आती
ये झड़ियाँ सवालों की लाया है सावन
कहर ढा रही है ये बारिश की बूंदे
उदासी जवां दिल में लाया है सावन
कहे क्या किसी से बताओ तुम्ही अब
जुदाई में 'ऋतु' को रुलाया है सावन

ऋतु चतुर्वेदी

बस....लिखती हूँ,

मैं मुहब्बत लिखती हूँ,
जो कभी मैंने की ही नहीं,
मैं इश्क की मीठी चाशनी लिखती हूँ,जो
कभी मैंने चखी ही नही,
मैं वो कहानी लिखती हूँ,
जो कभी हुई ही नहीं,
मै वो गीत लिखती हूँ,
जो कभी मैंने गुनगुनाए ही नही,
मैं वो हर बात लिखती हूँ,
जो कभी हुई ही नही,
मै वो इन्तजार लिखती हूँ,
जो कभी मैंने किया ही नही,
मैं वो इकरार लिखती हूँ,
जो कभी मैंने किया ही नही,
मै वो इश्क लिखती हूँ,
जो कभी मुझे हुआ ही नही,
मै मुलाकात के चंद लम्हे लिखती हूँ,
जो कभी मुझसे हुई ही नही,
मैं वो इजहार लिखती हूँ,
जो कभी मैंने किया ही नही,
मै चाँद तारे की बात लिखती हूँ,
जो कभी मेरे थे ही नही,
मै अक्सर खुद की वेदना ,
पीड़ा, तड़प लिखती हूँ,
मै क्या क्या नही लिखती ,
क्यूँ लिखती हूँ पता ही नही,
मुसीबतें, मुश्किले,
हारने जीतने के हालात लिखती हूँ,
मै कभी कभी एक शख्स को लिखती हूँ,
जिससे कभी मिली ही नही,
अच्छा लगता है उस शख्स को लिखना,
जो कभी मेरा था ही नही,
खुशियाँ हजारों मेरी झोली में डालता है,
जिसे मैंने देखा ही नही,
डूब जाती हूँ काल्पनिक दुनिया में,
जिसका कोई अस्तित्व ही नही,
बस यही ख्वाहिश ,ख़्वाब ,
खताए लिखती हूँ,
बस लिखती हूँ,बस लिखती हूँ,
बस लिखती हूँ,
कलम, कल्पना, कागज पर उतरती,
तो भावों को पिरोती हूँ,
एक मामूली सी रचनाकार हूँ मै,
शब्द से मुहब्बत है मुझे।
होती है बहुत सी गलतियॉ लिखने में
वो मै जानती हूँ,
पर अच्छा लगता है लिखना,
तो कुछ लिख लेती हूँ।
आनंद की अनुभूति कराता है लेखन,
इसलिए इससे नाता रखती हूँ,
हाँ, मैं कभी कभी जो नहीं लिखना हो
वो भी लिख लेती हूँ,
बस...बस.... लिखती हूँ।।।

डा राजमती पोखरना सुराना

गोण्डा इकाई

कविता

जिस आज़ाद गुलिस्तां के हम परिंदे हैं,
उसको सींचा है जिन्होंने लहू देकर अपना ।
हमारा फ़र्ज़ है हम याद उन्हें हरदम रखें।
हम उनकी रूहों के सुकून ही के मद्देनजर,
बनाए रखना करम इस वतन की मिट्टी पर,
खुदाए पाक से फरियाद ये हरदम रखें।
उन्होंने देखे ख़्वाब मुल्क की तरक्की के,
हमारा फ़र्ज़ है उन ख्वाबों की ताबीर करें ।
हमारा फ़र्ज़ है ख्वाबों में उनके रंग भरें।
वतन को अपने हम
आबाद-ओ-शाद हरदम रखें।

शैल बाला सिंह

दरवाज़े पर पड़ा डोरमैट हूँ मैं

दरवाज़े पर पड़ा डोरमैट हूँ मैं ,
तो मेज़ पर सलीके से
बिछा मेज़पोश भी हूँ !
खूंटे से बँधी गाय हूँ ,
तो जंगल की सिंहनी भी हूँ !
गुरुता हूँ राग मल्हार की ,
तो रुद्र का तांडव भी हूँ !
कली हूँ जूही की ,
तो नागफ़नी की झाड़ भी हूँ !
साँझ ढले द्वार पर
प्रतीक्षारत आकुल नैन हूँ ,
तो अलसाई दोपहरी की
पुरसुकून नींद भी हूँ !
ज़ब्त करने में धरती हूँ ,
तो फट पड़ने में आसमान भी हूँ !
एक-एक पल में
सौ-सौ मौतें देने वाले के लिए भी
माँगती हूँ लम्बी उमर की दुआएं !
व्रत नहीं रखे जाते मेरे लिए ,
जिये जाती हूँ फिर भी साल दर साल !
मुझे नहीं पहचाना ?
अजी औरत हूँ जनाब !

शैल बाला सिंह

वंदे मातरम्, जय हिंद

लहर लहर लहराकर तिरंगा ,
आज खुशी से लहराता है,
लहर लहर लहराकर तिरंगा ,
आज फिर बतलाता है ।
मत भूलो उस लहू को...
जिसका इस माटी से नाता है।
आज धरा भी गाती है,
गीत...उन्ही रखवालो की ,
सीचा था इसको जिसने ,
लहु बनाकर पानी सी।
प्राण की अपनी बली दिया
हंसते -हंसते दिवाने सा,
भरी जवानी त्याग दिया ,
देश प्रेम मे मस्तानो सा ।
कितने दीपक बुझ गए ,
भारत की लाज बचाने को,
भारत की मान बढाने को ,
भारत की शान बढाने को।
आज उसी धरा से देखो ,
महके कितने पुष्प यहां ,
एक तरफ विज्ञान सुसज्जित,
एक तरफ आध्यात्म यहां,
चांद सितारे भी लालायित,
भारत धूलि पाने को ,
मेवाड की मिट्टी लाकर के ,
माथ पर तिलक लगाने को ।
लहर लहर लहराकर तिरंगा ,
आज खुशी से लहराता है,
लहर लहर लहराकर तिरंगा ,
आज फिर बतलाता है ।
मत भूलो उस लहू को...
जिसका इस माटी से नाता है।

विभा श्रीवास्तव

बनेगा विश्व गुरु

आज सबको हम ,
एक कथा बताते हैं,
हां जी कथा बताते हैं।
बनेगा विश्व गुरु भारत ,
ये सबको बतलाते हैं।।
दिव्य - कुंभ को भव्य - कुंभ ,
करके दिखलाया है ।
योगा में भी हमने अपना ,
परचम लहराया है ।।
आध्यात्म गुरु था पहले ही ,
विश्व को बतलाया है ।
ऋषि मुनियों की वाणी से ,
अमृत पाया है ।।
हम सब ने ही विकास किया,
तकनीकी ने भी साथ दिया।
आज फिर से हमको संस्कृति का,
झंडा फहराना है ।
विश्व गुरु है भारत ,
सब को बतलाना है ।।
हां जी सब को बतलाना है।।
हस्तशिल्प, पर्यटन का,
बस यहीं ठिकाना है।
हथकरघा , लघु उद्योगों का ,
सुंदर ताना-बाना है ।।
छोड़ चाइना समान का लोभ ,
स्वदेशी अपनाना है ।
प्राचीन संस्कृति को बढ़ाएं ,
अब नया खादी का जमाना है।।
खाएं केले के पत्ते में ,
करें मिट्टी के दियों का गुणगान।
नित्य कर्म करके करें ,
योगासन और ध्यान।।
पहले से ही संस्कृति है ,
हमारी इतनी धनवान।
बनेगा विश्व गुरु भारत ,
भारत ही है महान।।
है हम सब की जान।
न कर पाऊं, मैं तो बखान।।
इसकी महिमा है महान।
हमारी आन बान और शान।।

सुनीति केशरवानी 'नीति'

बहुत लहू बहाया है

बहुत लहू बहाया है
शहीदों ने इस वतन के लिए
है फ़र्ज़ ये इसे बर्बाद ना होने दे हम
आओ जुड़े अपने देश अपनी संस्कृति से
हम एक बार फिर इसे गुलाम ना होने दे।
तन से हमें आज़ाद वो करा गए थे
मन हम क्यूँ सौंप रहे हैं उनको
अपने विचारों को
अपनी संस्कृति से जोड़े रखना
पश्चात्य फैशन में खुद को ना खोने देना
आधुनिकता विचारों में आए तो ठीक है
व्यापारों में , व्यवसायों में आए तो ठीक है,
पर डूबने से बचा लेना खुद को अंग्रेजी में
अपनी हिंदी को हिंग्लिश ना होने देना।।
देश को फिर से गुलाम ना होने देना।।।

ज्योत्स्ना मिश्रा

बिजनौर

तो , बात बने ....

बहुत चिराग बुझाए होंगे तूने ऐ हवा
कुछ जलाकर भी दिखाओ तो बात बने ।
तन्हा-तन्हा बोझिल होता है सफर
संग अपनों के चलो तो बात बने ।
खामोशियां बढ़ाती हैं फासले अक्सर
कभी मिल बैठ कर बतियाओ तो बात बने।
रूलाने को तो अक्सर रूलाते हैं लोग
कभी किसी को हंसाओ तो बात बने ।
यूं कांच की मानिंद बिखरना लाजमी तो नही
'सुमन ' बन के खुशबू लुटाओ तो बात बने ।

सुमन चौधरी 'सुमन'

बरसात

गर्मी सर्दी दोनों भारी
नही सहना आसान है
पर बारिश का मौसम बेहद
कर देता परेशान है
ऊँची बस्ती से पानी का
नीचे आकर भर जाना
टूटे छप्पर से बूँदों का
सब कुछ गीला कर जाना
कागज की सी नाव स बहने
लगता सभी सामान है
पर बारिश का मौसम....
कंगाली में आटा गीला
बच्चे तरसे खाने को
आसमान की ओर देखते,
दुआ करे रुक जानेको
कहाँ जलाये चूल्हा-चौका
नही दिखे कहीं स्थान है
पर बरसात का मौसम
रोजी-रोटी के भी लाले
पड़ जाते बरसातों में
मजदूरी को बेबस रहते
शस्त्र लिए सब हाथों में
रोज-रोज का झगड़ा घर में
भूखी रोती शाम है
पर बारिश का मौसम

अंजलि गोयल 'अंजू '

कविता

शब्द,तुम ठहरो जरा
ठहरो जरा ठहरो जरा
ए शब्द तुम ठहरो जरा
दिल की मेरी गहरी नदिया में
क्यों तुम डूबे जाते हो इस तरह
ठहरो जरा----------
मंजिल के भटकते राही नहीं तुम
अपनी कलम सम्भालो चलो जरा
ठहरो जरा ----------
गीत गजलों का सागर है ये दिल
शब्द तुम निर्भीक बनो निर्भय बनो
ठहरो जरा----------
चक्रवात जब चला भावों का
कुछ शब्द किनारे बहने लगे
ठहरो जरा ----------
गीत,शायरी,गजलों के पन्ने
उफनती नदिया में बहने लगे
ठहरो जरा----------
खुशकिस्मत थे जो डूबे नहीं
सीने से लिपट अश्रु बहाने लगे
ठहरो जरा ----------
भावों के प्रेम बधंन में बंधे
कविता बन दिल में उकरते चले
ठहरो जरा ठहरो जरा
ए शब्द तुम ठहरो जरा

दामिनी कालरा डेज़ी

नोएडा

गीत

संग परिवार है एक सौगात है।
प्रेम की हो रही आज बरसात है।।

एकजुटता सभी के दिलों में बसी,
डोर विश्वास की बीच में है कसी।
मिल रहे सब गले वाह! क्या बात है,
प्रेम की हो रही आज बरसात है।।

दिल उदासी भरा फिर रहे क्यूं भला,
मिल रहे प्रेम की सब मशालें जला।
देख रोशन हुई जो बुझी रात है,
प्रेम की हो रही आज बरसात है।।

मन परेशान हो साथ देते सभी,
फिर अकेला न महसूस होता कभी।
हो अगर मुश्किलें दे रहे मात है,
प्रेम की हो रही आज बरसात है।।

दीप्ति मित्तल

दोहे

शिव की महिमा जान लें,हैं वो जग के नाथ।
प्रेम भाव की भक्ति हो, पकड़े रहते हाथ।।
वामंगी माता सती, चंदा सोहे भाल।
कष्टों को हरते सदा, करके कृपा विशाल।।
गण सब भोलेनाथ के , रहते हैं तैयार।
धधके ज्वाला अग्नि की , शत्रु वार बेकार।।
कितना तेज प्रवाह है ,
शिव ही सके सँभाल।
गंगा को धारण किया ,
जटा सुशोभित भाल।।
मंगलदाता शंभु शिव , प्रभु हो चारों धाम।
होती जय जयकार है , करते सभी प्रणाम।।

आरती झा आद्या

हुस्न

हमें अपने हुस्न पे गुरूर है
उन्हें अपने इश्क पे नाज़ है
हमारे अपने अंदाज हैं
उनके अपने अंदाज हैं
हम छोटी छोटी बातों पर खफा
वो हल्की सी मुस्कान के मोहताज़ हैं
हमारे अपने अंदाज हैं
उनके अपने अंदाज हैं
वो दिलों जान देने को राज़ी
हमारा जी ज़रा नासाज़ है
हमारे अपने अंदाज हैं
उनके अपने अंदाज हैं
हमारे लिए ये है अंजामे मंजिल
उनके लिए ये सफर का आगाज़ है
हमारे अपने अंदाज़ हैं
उनके अपने अंदाज़ हैं

डा शिवानी चंद्रा

कानपुर

लोकगीत

सावन मा बरसे बादल,बैरी भिगाए आंचल,
सूखा पड़ा है मन का बाग रे।
गीत मिलन के गाऊं,चाहत के दीप जलाऊं,
प्रीत लगाए हिय मा आग रे।
तरसे दर्शन को नैना ,
जागूं मैं अब दिन रैना,
भावे न अब कौनों राग रे।
बागों में पड़ गए झूले,
चित्त मोरा सुध बुध भूले,
गए सावन मा ये तो फाग रे।
यादों की ओढ़े चादर,
घिर घिर का आए बादर,
बिजुरी डसे है जैसन नाग रे।

शिप्रा सिंह

हमनशीं

लौटने का मन नहीं मेरा करे है हमनशीं,
क्यों नहीं आगोश में मुझको धरे है हमनशीं।
हर महीने मैं मिलूँगा आपसे सच बा खुदा,
क्या पता क्यों मन नहीं मेरा भरे है
हमनशीं।
या बुला लो आप मुझको या शहर मेरे आइए
आइए इतना नहीं है वो परे ओ हमनशीं।
शेर हो तुम तो वनों का हो मिरे महबूब तुम
लो मुझे आगोश में क्यों कर डरे हो
हमनशीं?
आप हीरा हो मेरा सरिता हो अनमोल तुम
आप जैसे लोग कितने हैं खरे हमनशीं?

सरिता गुप्ता

नारी जीवन

सालों से खुश थे हम कि
एक कहावत कहलाने लगी है,
कि नारी भी पुरुषों से
कंधे से कंधा मिला ने लगी है,
वायु जल हो या थल हर जगह अपनी
किस्मत आजमाने लगी है,
जमीन तो जमीन आसमा पर भी
ऊंची उड़ाने लगाने लगी है,
यूं ही वक्त बदलने लगा ,
दौर पे दौर गुजरने लगा,
लोग अपनी बेटियों
और बहनों को पढ़ाने लगे,
जीवन में अब आगे बढ़ाने लगे,
समय और बदलता रहा,
वक्त और निखरता रहा,
अब पति भी अपनी पत्नियों को पढ़ाने लगे,
उनको लेकर अपने भविष्य के
सपने सजाने लगे,
लेकिन दुर्भाग्य तुम्हारा हे नारी!
तुम्हारा जीना दुश्वार हो गया
किसी एक की गलती से,
पूरा नारी समाज शर्मसार हो गया।
लेकिन हे पुरुष वर्ग!
मेरा तुमसे भी है एक सवाल,
तुमसे भी होता है यह सब
तब नहीं मचता क्यों इतना बवाल,
हां मानते हैं हम सब को संभलना होगा
पर सब एक जैसी होती है,
इस सोच को तुम्हें भी बदलना होगा

पुष्पा सिंह

भोले भंडारी की महिमा

शिव ही आदि, शिव ही अंत,
शिव ही तो ब्रह्माण्ड है।
सारे जग में शंकर जी की,
होती हर-हर महादेव जयकार है।।

दूब-शमी प्रभु को हे प्यारी,
गंगा जल प्रभु पे बलिहारी।
सच्चे मन से जो करता सेवा,
पूर्ण मनोरथ करते देवा ।।

सच्चे मन से जो भी ध्याता,
सदाचार अरू संयम पाता।
नित-नित बढ़ती जीवन आशा,
कटे मनुज की घोर निराशा।।

शिव की भक्ति में सुख पाया,
उर में अति आनन्द समाया।
शिव की महिमा हे अति पावन,
देती सुख उर को मनभावन।।

कृपा तुम्हारी सभी हे पाते,
काम सफल प्रभु सब हो जाते।
मुझको देना भोले नाथ सहारा,
पल-पल जपूं में नाम तुम्हारा।।

हाथ जोड़ कर विनती करती,
चरणों में प्रभु माथा धरती।
बना रहे आशीष तुम्हारा ,
जीवन धन्य हो जाए हमारा।।

हे त्रिपुरारी!नाथ महेश्वर,
प्रभु मुझको दरश दिखाओ।
माया में अटकी,पथ में भटकी,
तुम ही आकर प्रभु पार लगाओ।।

सुषमा सिंह उर्मि

दुर्लभ जग में प्यार

दुर्लभ जग में प्यार है बन्धु!
दुर्लभ जग में प्यार।
मात-पिता या भ्राता- भगिनी
सुत, दुहिता या जीवन-संगिनी।
सब मतलब के यार जगत में
दुर्लभ है अति प्यार।
लोभ,मोह,माया,मद,मत्सर
ये सब जग में पकड़े कस कर।
इनसे मिले न प्यार जगत में
दुर्लभ है अति प्यार।
मत जीवन को इनमें बाँधो
माया ठगिनी है अति साधो!
झूठा जग चमकार जगत में
दुर्लभ है अति प्यार।
नानक,दादू और कबीरा।
तुलसी,सूर धरें मन धीरा।
प्रभु को लेव पुकार जगत में
दुर्लभ है अति प्यार।
जगत में दुर्लभ है अति प्यार।

डॉ सुषमा त्रिपाठी

ग़ज़ल

नींद को यूँ मनाते रहे रात भर ।
ख़्वाब हम को बुलाते रहे रात भर ।
चाह दीदार की ग़मज़दा मन रहा,
अश्क ख़्वाहिश मिटाते रहे रात भर ।
चाँद सूरज हुआ अब बदल करवटें ,
उफ़ सितारे जगाते रहे रात भर ।
आँख जलने लगी अश्क सूखे सभी,
ज़ख़्म सब कुलबुलाते रहे रात भर ।
इश्क़ 'सीमा' करे झेलते ग़म रहें ,
बात खुद को बताते रहे रात भर ।

सीमा वर्णिका

बढ़ता चल आगे

मुश्किल जब हो तमाम, आए कोई न काम,
जपके तू प्रभो नाम, बढ़ता चल आगे।
जीवन भी हुआ उदास, आए कोई न पास,
लेके हरि नाम खास, दुखड़े सब भागे।।
पाए आशीष आज, बिगड़े सब बने काज,
सारी दें छोड़ लाज, द्वारे पे जाके।
रखना सिर सदा हाथ, तेरा ही रहे साथ।
चरणों में झुके माथ, मंदिर मे आके।।

श्रद्धा श्रीवास्तव

गोरखपुर

सावन

सावन झूम के आया है
सावन झूम के आया है ,
काले काले मेघा लाया है ।।
सावन झूम के आया है,
खुशियों का संदेशा लाया है ।
चिड़िया पेड़ों पर चहक उठीं,
सागर देखो लहराया है ।
सावन झूम के आया है,
खुशियों का संदेशा लाया है।।
बागों में झूले पड़े हुए हैं ,
देख कर मन लहराया है
हवा में सोंधी सोंधी खुशबू
हरा रंग मन भाया है , ध
सावन झूम के आया है
खुशियों का संदेशा लाया है।।
भर गए ताल तलैया अब तो
खेतों में फैली हरियाली है ।
पगड़ी बांध किसान खेत में,
हरष हरष मुस्काया है ।
सावन झूम के आया है,
खुशियों का संदेशा लाया है।।
सिंदूरी वो शाम सुहानी,
जैसे कहती कोई कहानी।
ना कोई राजा ना कोई रानी ,
फिर भी लगती वह मस्तानी।
सावन झूम के आया है ,
खुशियों का संदेशा लाया है।।
झिलमिल सितारों की ओढ़े चुनरिया,
रैना चलीअपने चंदा की नगरिया ।
आंख मिचोली खेलें नभ में बदरिया,
मंद मंद देखो आज चांद मुस्कुराया है।
झूम के सावन आया है,
खुशियों का संदेशा लाया है।।

साधना त्रिपाठी हिंदू प्रिया

सावन का महीना

वो सावन का महीनाष्ठ.
याद आता है मुझे,
वो सावन का महीना,
वो रिमझिम सी बारिश,
वो चिड़ीयों का चहकना!
वो पेड़ो की हरियाली,पड़े उन पे झुले,
वो भवरों की गुंजन, वो मन का बहकना!
याद आता है मुझे वो सावन का महीनाष्ठ.
वो घर से निकलना, वो भीग के आना,
वो मन का जैसे, ताजगी से भर जाना!
घर के दरवाजे पे,
वो माँ का इंतज़ार करना,
मुझे देख थोड़ा गुस्सा,
वो प्यार का इज़हार कर जाना!
याद आता है
मुझे वो सवान का महीनाष्ठ
वो बेफ़िक्री से जीना,
हर रंग मैं रंग जाना,
किसी बात को भी ना ,
दिल से लगाना!
सब के दिलों मे,
वो दिल बन के धड़कना,
वो शरारतों का करना,
प्यारी सी डाँट खाना!
याद आता है
मुझे वो सावन का महीनाष्ठ.
आज भी वही सावन,आता तो है,
बादल रिमझिम बारिश,बरसाता तो है!
चिड़ियों की चहक,
भँवरों की गुंजन भी वही है,
ज़िंदगी मे किसी बात की ,
कमी भी नहीं है!
पर ना जाने क्यु याद आता है मुझे
वही मायके का सावन
वो सुकून भरी ज़िंदगी ,
वो बचपन का जीना!
याद आता है
मुझे वो सावन का महीनाष्ठ.

रेनू चतुर्वेदी,

सुनैना

शीश गंग की धार,भाल पे चंद्र विराजे।
डम डम डमरू हाथ,वसन बाघंबर साजे।।
गले सर्प की माल,सदा शिव शंकर सोहे।
होते भक्त निहाल,त्रिलोचन मन को मोहे
भक्ति भाव का मास,हुआ करता है सावन।
प्यारा शिव का धाम,भावना रखिये पावन।।
अटल प्रेम विश्वास,देव हम लेकर आये।
रोली चंदन धूप,धतूरा पुष्प चढ़ाये।।
करो नमन स्वीकार,जगत के तुम रखवाले।
जीव-जन्तु खुशहाल,सभी को तुमने पाले।।
जीवन हो रसधार,उमापति यही गुज़ारिश।
मिट जाये संताप,खुशी की कर दो बारिश।।

शशी किरन श्रीवास्तव

सावन बीत रहा है

सावन बीत रहा बाबा ,
अब तो मिलने आ जाओ ।
मेरी प्यारी बिटिया आ जा ,
ये कहकर बहला जाओ।
भेद बड़ा है ,रोग जुड़ा है,
पीड़ाओं से मन जकड़ा है।
अपने स्नेह की बरखा से,
दुःखों की माटी धुल जाओ।
गिर जातीं हूँ अक्सर मैं अब भी,
गोद उठा चोटें मेरी सहला जाओ।
माथे आशीष हाथ रख अपना,
सारे शोक मिटा जाओ।
पीड़ा का घना अंधेरा हो जब,
तुम चटख धूप दिखला जाओ।
मुस्काऊं मै पहले जैसे ,
कोई जुगत लगा जाओ ।
सावन बीत रहा है बाबा ,
अब तो मिलने आ जाओ।

डा.प्रीति त्रिपाठी

पहली बारिश

सावन की पहली बारिश है ,
धरती की अंबर से ,गुजारिश है,
तू ऐसे बरसे ,
भीगा दे ,हर कोना ,
धरती की अंबर से, गुजारिश है,
सावन की पहली बारिश है,
सहेजूं जीवन को,
हर रूप में ,
निखरे जीवन ,नए रंग ,रूप में ,
तुझसे ये चाहत, बतानी है,
धरती की अंबर से गुजारिश है,
सावन की पहली बारिश है ,
सावन की पहली बारिश है ,

चित्रा श्रीवास्तव

सावित्री देवी स्मृति सम्मान इस बार **अनीता सिंह 'अनु'** को

प्रयागराज । हर माह मिलने वाला सावित्री देवी स्मृति सम्मान इस माह अगस्त 2023 का शहर समता महिला काव्यगोष्ठी नोएडा इकाई की अनीता सिंह अनु को दिया जाएगा। अनीता सिंह अनु पर चार पेज का सावित्री देवी स्मृति सम्मान विशेषांक भी प्रकाशित होगा, जिसमें रचनाकार को 30-35 कविताएं, कहानी, अपना जीवनवृत्त और अपना आत्मसंघर्ष टाइप करके देना पड़ेगा। साथ में एक पोस्ट कार्ड साइस की फोटो भी।

बधाई सन्देश